2.3.6 उच्च स्तरीय कार्यक्रमों में उच्च शास्त्रीय पाठ पढ़ाते समय सरल मानक संस्कृत/संस्कृत का उपयोग।

Use of Simple Standard Sanskrit/ Sanskrit while teaching higher shastric text in higher level programmes.

यह विश्वविद्यालय अपने उच्च कार्यक्रमों और उच्च शास्त्रीय ग्रंथों के शिक्षण में सरल मानक संस्कृत का उपयोग करता है। नियमानुसार यहां के सभी शिक्षक संस्कृतविषय को संस्कृत में ही पढ़ाते हैं तथा आधुनिक विषय के आचार्य भी अपने पाठ्यक्रमों को पढाते समय सरलमानक संस्कृत का प्रयोग करने का प्रयास करते हैं। वे शास्त्रों के गूढ विषयों को भी सरल संस्कृत में आसानी से समझने योग्य बना देते हैं। शिक्षकों द्वारा अपनाए गए कुछ सिद्धांत हैं, जिन्हें व्यवहार में लाया जाता है। उदाहरण के लिए -

शास्त्राध्ययन में संस्कृत का प्रयोग।

- कार्यशाला का आयोजन।
- मातृभाषा के शब्दों का प्रयोग।
- पाँच लकारो का प्रयोग।
- कर्तृवाच्य का प्रयोग।
- छोटे वाक्यों का प्रयोग।
- पारिभाषिक शब्दावली का सरलीकरण।
- भाषा को सरल बनाने के लिए कुछ शब्द।
- परस्मैपद का प्रयोग।
- शास्त्राध्यापनमें सरल संस्कृत प्रयोग।

इस विश्वविद्यालय में शिक्षक कक्षा में पढ़ाते समय बहुत ही सरल संस्कृत का उपयोग करके पढ़ाते हैं। इससे कठिन विषय भी छात्रों के मस्तिष्क में आसानी से प्रवेश कर जाते हैं। और वे छात्र स्वयं सरल संस्कृत वार्तालाप का अभ्यास करते हैं, ताकि वे

किसी भी पाठ को स्वयं पढ़ने में सक्षम हो सके। भाष्यों का वाक्य-विन्यास सरल मानक संस्कृत के अनुरूप होता है। इसलिए यहाँ के शिक्षक सामान्य बुद्धि वाले छात्रों के लिए प्रस्तुत पद्धति का उपयोग आवश्यक रूप से करते हैं। जहां शास्त्रीय विषयों के शिक्षक सरल मानक संस्कृत पद्धति के अनुसार शास्त्रीय पाठ पढ़ाते हैं, वहीं आधुनिक विषयों के शिक्षक भी सरल मानक संस्कृत पद्धति का पालन करते दिखते हैं।

कार्यशाला का आयोजन-

विश्वविद्यालय सरल मानक संस्कृत के प्रचार और प्रसार के लिए यथावसर कार्यशालाओं का भी आयोजन करता है। उन कार्यशालाओं में संस्कृत के विशेषज्ञ विद्वान् आमन्त्रित किए जाते हैं और संस्कृत में उनके व्याख्यान कराए जाते हैं। इससे छात्र भी समझते हैं कि हमें व्यवहार में सरल मानक संस्कृत काउपयोग कैसे करना चाहिए और इसका शास्त्राध्ययन में क्या लाभ है?

मातृभाषा के शब्दों का प्रयोग-

शास्त्रीय विषय को सरल ढंग से समझने के लिए क्षेत्र विशेष की भाषा में विद्यमान संस्कृत शब्दों का प्रयोग व्यवहार में भी किया जाता है। उदाहरण के लिए, केले के लिए उत्कल में कदली का प्रयोग किया जाता है और संस्कृत में भी कदली का प्रयोग होता है। इसी प्रकार कटहल के लिए महाराष्ट्र में पनस् का प्रयोग होता है और संस्कृत में भी पनस् का ही प्रयोग होता है। इसीलिए उस क्षेत्र विशेष में प्रयुक्त होने वाले संस्कृत शब्दों का यथासंभव प्रयोग करके भाषा को सरल बनाया जाता है।

पाँच लकारों का प्रयोग-

वैसे तो संस्कृत में ग्यारह लकार हैं, लेकिन संस्कृत के सरलीकरण के लिए यहाँ प्रायशः केवल पाँच लकारों का उपयोग किया जाता है, अर्थात् लट्-लोट्-लङ्-लिङ्-लट्।

इसका लाभ यह है कि संस्कृत से अनभिज्ञ व्यक्ति भी इसे सरलता से समझ सकता है। पाँच लकारों के रूप इस प्रकार है -

लट्	-	पठति, पठतः, पठन्ति।
लोट्	-	पठतु, पठताम्, पठन्तु।
लङ्	-	अपठत्, अपठताम्, अपठन्।
विधिलिङ्	-	पठेत्, पठेताम्, पठेयुः।
लृट्	-	पठिष्यति, पठिष्यतः, पठिष्यन्ति।

इस प्रकार यह देखा जा सकता है कि यह पाँच लकार सभी के लिए सुलभ और सरल हैं, तथा हर कोई इन लकारों का उपयोग करने में सक्षम है।

कर्तृवाच्य का प्रयोग-

संस्कृत में तीन वाच्य हैं- कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य लेकिन यहाँ भाषा को सरल बनाने के लिए लिए केवल कर्तृवाच्य का उपयोग किया जाता है। कर्तृवाच्य में उपयोग की सरलता के कारण यह सभी के लिए बोधगम्य होता है। जैसे- राम गाँव जात है- रामः ग्राम गच्छति।

छोटे वाक्यों का प्रयोग-

अपने भावों को व्यक्त करने के लिए लंबे वाक्यों का उपयोग करने के बजाय यहां विश्वविद्यालय में सरल छोटे वाक्यों का उपयोग किया जाता है। इसका लाभ यह होता है कि परिसर में अधिकतर छात्र एक-दूसरे से संस्कृत में वार्तालाप करते दृष्टिगोचर होते हैं।

पारिभाषिक शब्दावली का सरलीकरण-

ऋषि-मुनियों ने जो ग्रन्थ लिखे हैं, उनकी भाषा प्रायः सरल होती है, परन्तु कुछ पारिभाषिक शब्दावली का भी प्रयोग होता है। इन्हें समझने के लिए छात्र श्रद्धापूर्वक

आचार्य के चरणों में बैठते हैं। वे गुरु के समीप आए हुए विद्यार्थियों के सामने पारिभाषिक शब्दावली को सरल शब्दों में समझाकर उनका स्पष्टीकरण करते हैं।

भाषा को सरल बनाने के लिए कुछ शब्द-

भाषा को सरल बनाने के लिए इस विश्वविद्यालय ने बोलचाल में कुछ ऐसे शब्दों का चयन किया है जिनका प्रयोग करके भाषा को सरल बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिए- तीसरे विभक्ति के लिए 'द्वारा' का प्रयोग। जैसे-

रामेण	-	रामद्वारावारा
हरिणा	-	हरिद्वारा
सरस्वत्या	-	सरस्वतीद्वारा
जगता	-	जगद्द्वारा

इसी प्रकार पञ्चमी विभक्ति के लिए 'तः' का प्रयोग होता है। जैसे-

रामत्	-	रामतः
हरेः	-	हरितः
सरस्वत्याः	-	सरस्वतीतः
जगतः	-	जगतः

इनके प्रयोग का लाभ यह है कि संस्कृत में विद्यमान राम आदि विभिन्न शब्दों के तत्सम विभक्ति रूपों का प्रयोग बिना स्मरण किये भी किया जा सकता है। इस प्रकार 'द्वयम्' का प्रयोग भी भाषा को सरल बनाता है। उदाहरण के लिए- 'द्वौ बालक, 'द्वे पुस्तके' और 'द बालिके' कहने के स्थान पर 'बालकद्वयम्', 'पुस्तकद्वयम्' और 'बालिकाद्वयम्' का प्रयोग स्पष्ट ही भाषा को सरल बनाता है। पाठ के आरंभ में एकवचन और बहवचन का प्रयोग ह बाहुल्य से किया जाता है। पुनः विशेष ज्ञान प्राप्त करने के लिए, भाषा क सरल बनाने के लिए द्विवचन का प्रयोग जाता है।

परस्मैपद का प्रयोग-

भाषा को सरल बनाने क लिए यह भी एक परिकल्प है कि आत्मनेपद व उभयपद के स्थान पर परस्मैपद का उपयोग अधिक किया जाता है, क्योंकि इस परस्मैपद का उपयोग आत्मनेपद की तुलना में थोड़ा आसान होता है।